मेहनती गधा

गधा, समुद्र के पास के छोटे से एक शहर में रहता था.
उसका मालिक लाल दाढ़ी वाला एक नौजवान आदमी था.

हर दिन मालिक अपने गधे को बंदरगाह पर ले जाता था.

वहां बड़े जहाज़ों में से सामान उतारा जाता था.
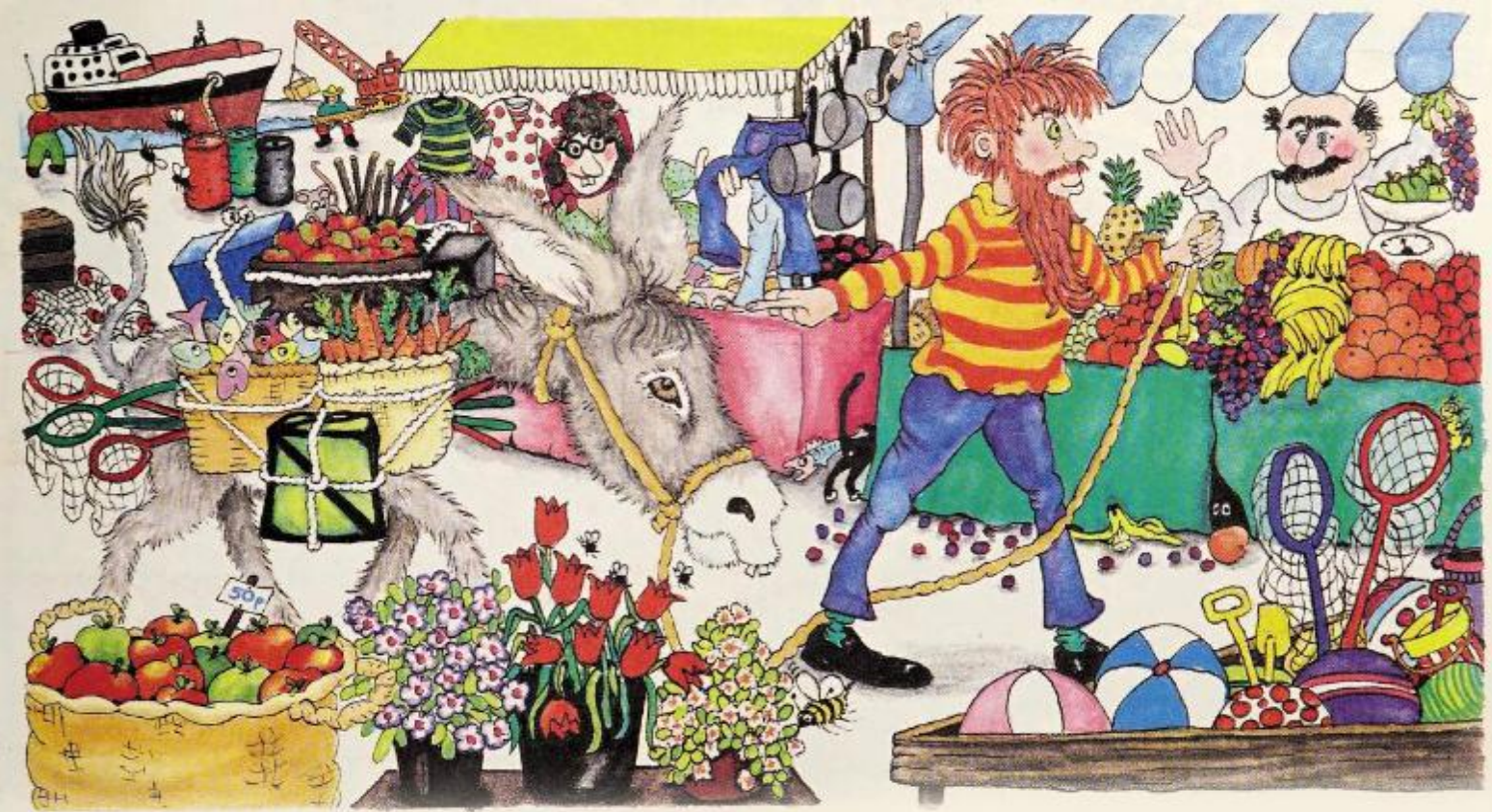
रोज़ मालिक गधे की पीठ पर भारी-भारी बक्से लादता था.

बक्से वाकई में बहुत भारी थे और गधे को उन्हें बाजार तक ढोकर ले जाना पड़ता था.
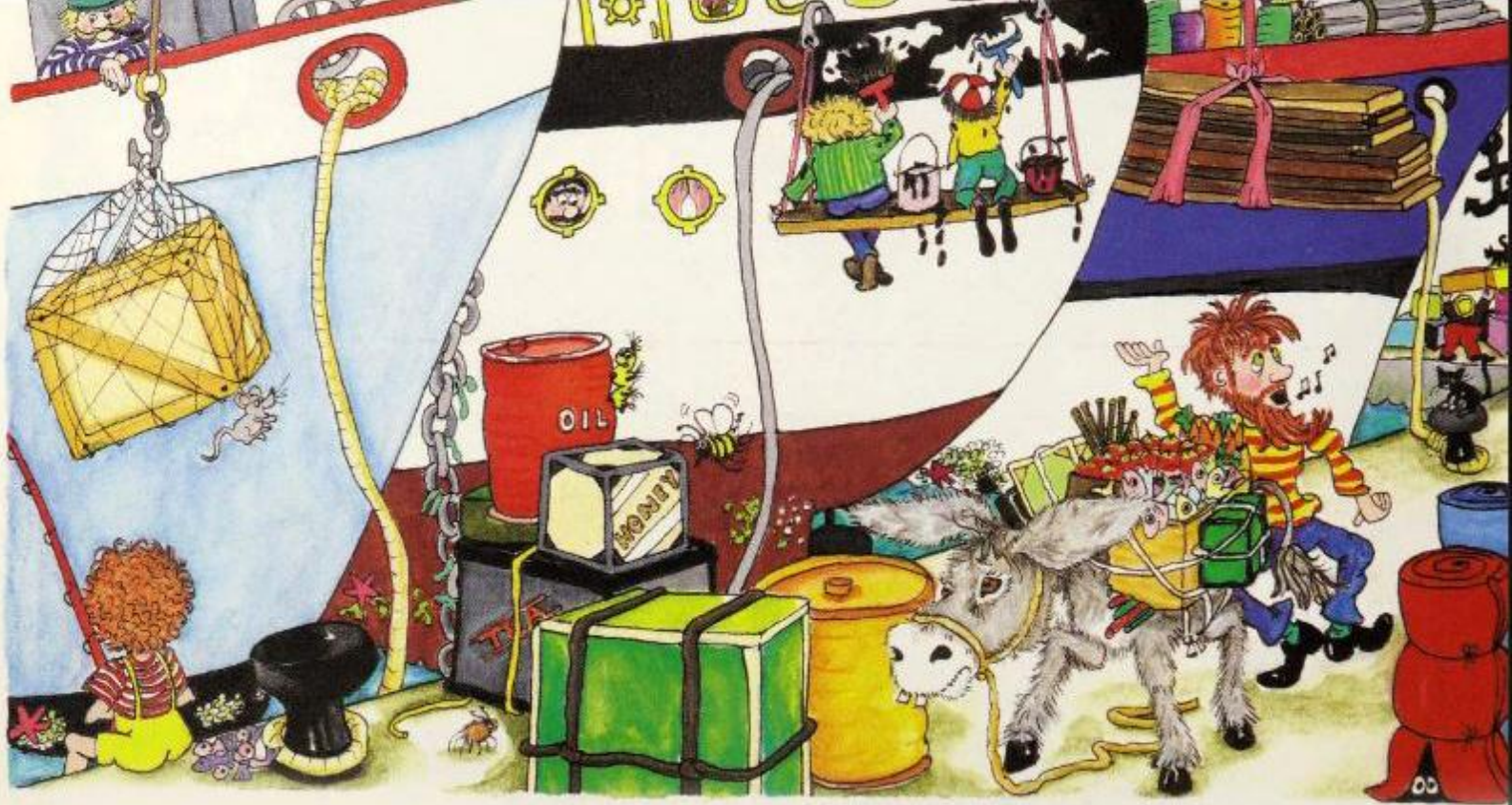
मालिक और गधा धीमे-धीमे चलते थे. उनके आसपास बड़े-बड़े जहाज़ होते थे. चलते-चलते मालिक गुनगुनाता था, पर गधे को भारी बोझ उठाना भारी पड़ता था.

लाल दाढ़ी वाले मालिक को इस बात का एहसास नहीं था कि उसका गधा रोज़ थककर पस्त हो जाता था. रोज़ाना गधे का भार बढ़ता ही जाता था.
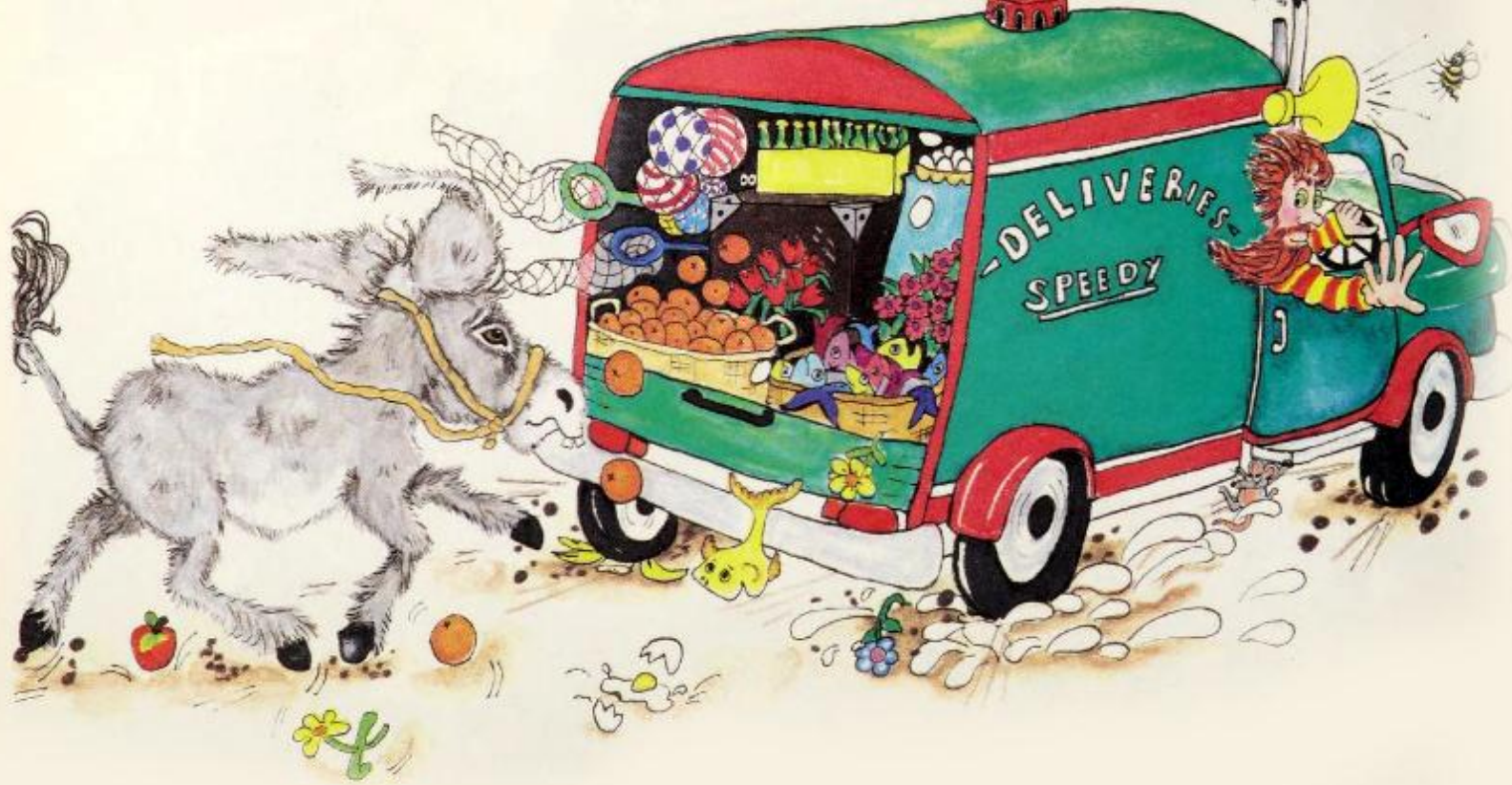
फिर एक दिन गधे के मालिक ने एक छोटा ट्रक खरीद लिया.

"अब मुझे तुम्हारी ज़रुरत नहीं पड़ेगी," उसने गधे से कहा.

फिर मालिक ट्रक में सवार होकर चला गया.

शुरू में तो गधा खुश हुआ. "अब मुझे वो भारी सामान नहीं ढोना पड़ेगा," उसे लगा.
“पर अब मुझे खिलायेगा कौन?” उसने सोचा.

शायद उसे कोई ऐसा आदमी मिल जाए जिसे गधे की ज़रूरत हो.
पर पोस्टमैन को गधे की ज़रूरत नहीं थी. उसके पास साइकिल थी.
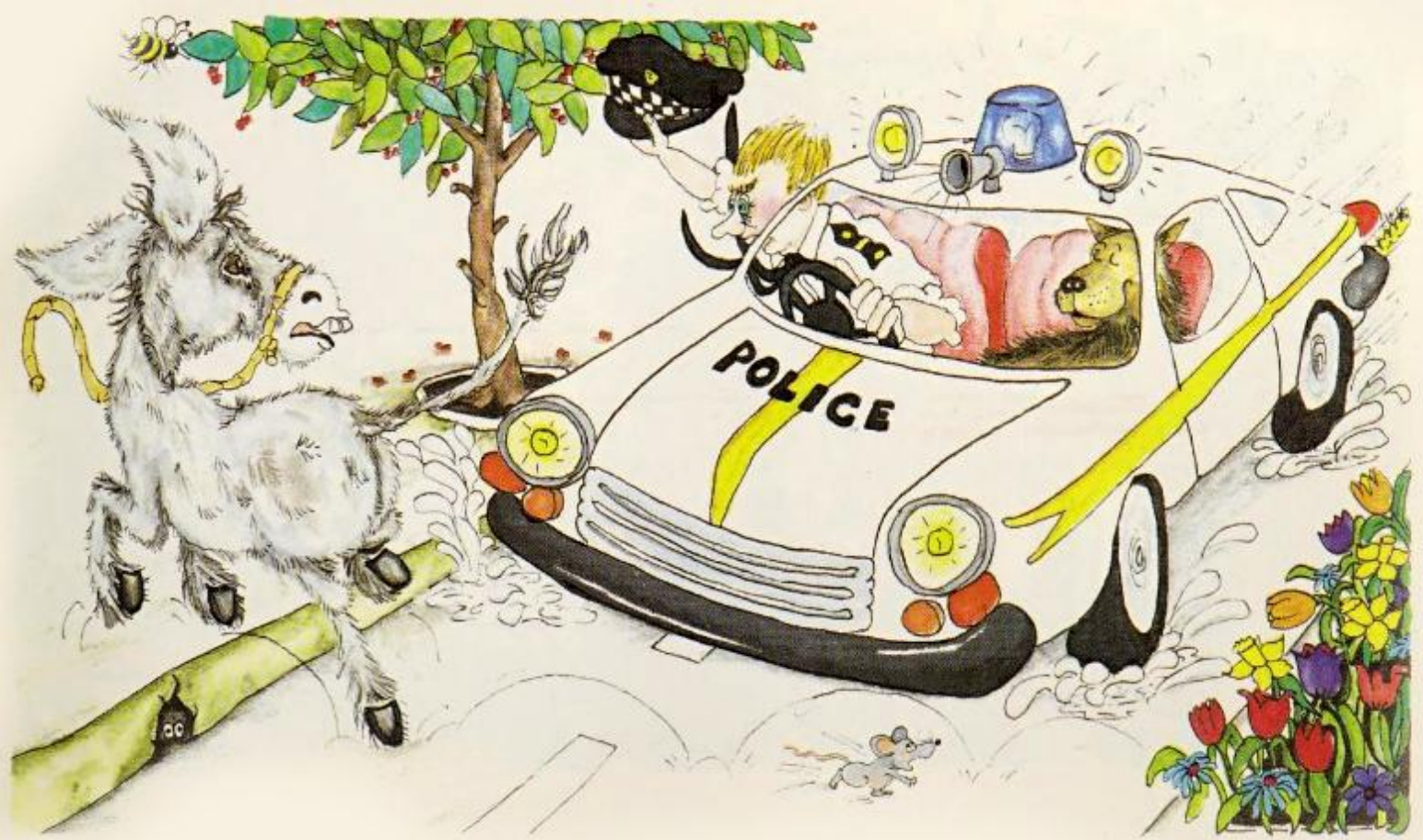
पुलिसमैन को भी उसकी ज़रुरत नहीं थी. उसके पास पुलिस की तेज़ कार थी.

किसी को भी गधे की ज़रूरत नहीं थी.

किसान को भी नहीं, उसके पास ट्रेक्टर था.

फिर उदास होकर गधा समुद्र के तट पर गया.

वहां उसे बहुत से बच्चे खेलते हुए दिखे. उसे बच्चों का एक झुंड भी दिखा.

बच्चे घोड़ी की सावरी करने का इंतज़ार कर रहे थे.

पर लम्बे इंतज़ार के कारण बच्चों को गुस्सा आ गया था.

"आओ, आकर मेरी मदद करो," घोड़ी के मालिक ने गधे से कहा.

फिर गधा भी उसी काम में लग गया और सभी बच्चों को अच्छी सवारी मिली.

बच्चों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्होंने

घोड़े की बजाए गधे की सवारी की.

सब बच्चों ने गधे को प्यार से थपथपाया और उसे खाने को मिठाई दी.
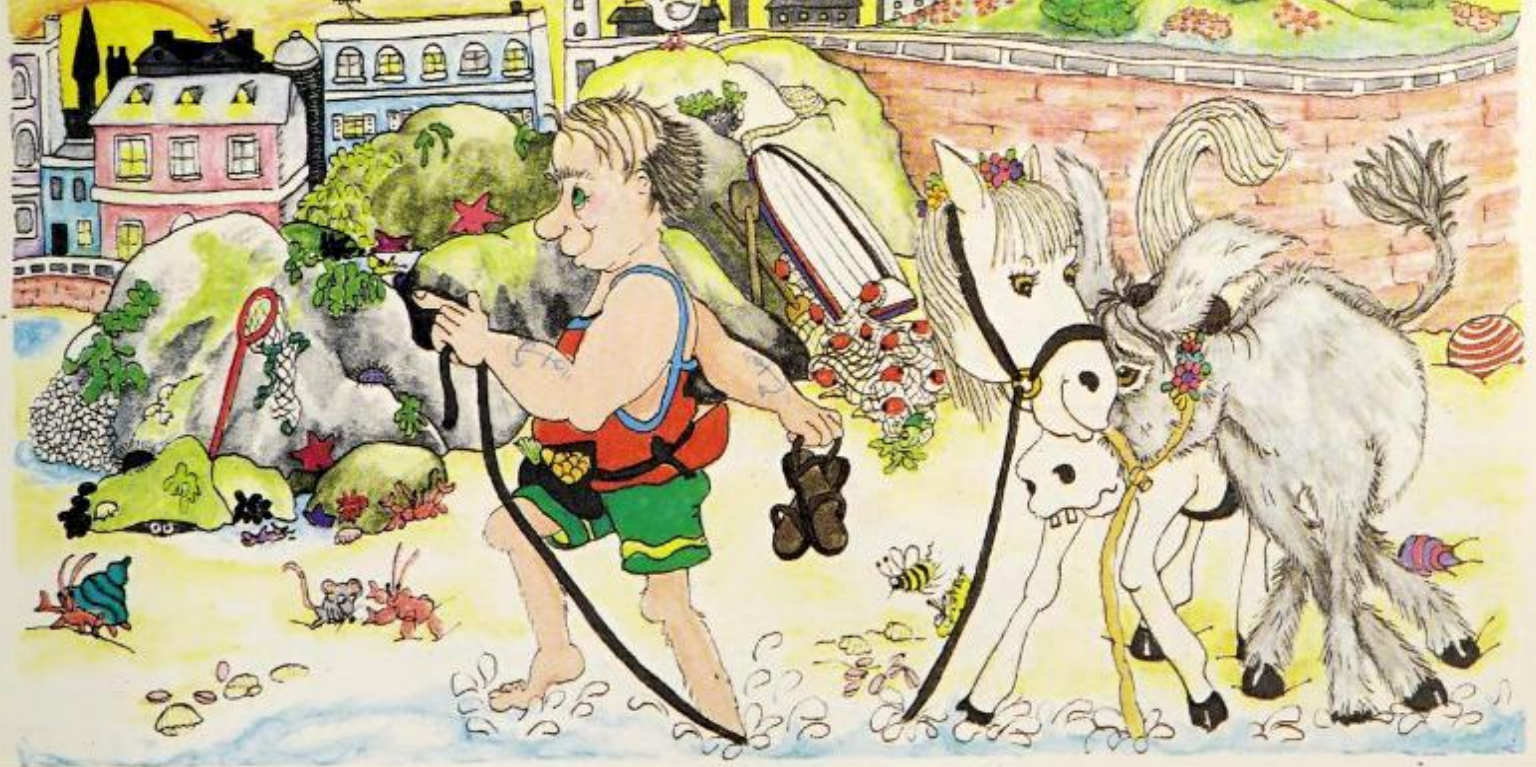
जब सूरज ढला और रात हुई तब आदमी ने अपनी घोड़ी से कहा,

"चलो अब घर चलने का समय हो गया है."

पर घोड़ी चाहती थी कि गधा भी उसके साथ घर चले.
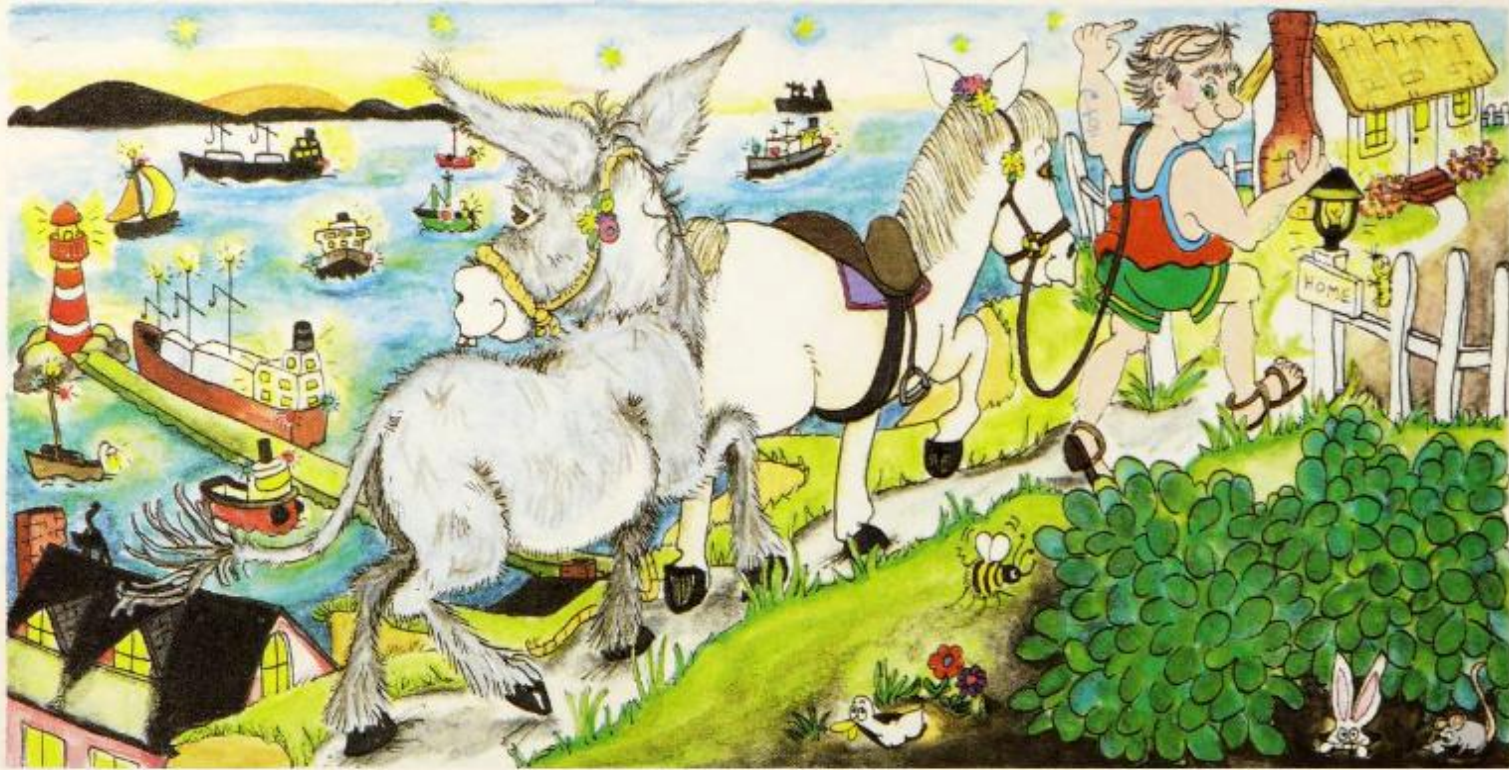
"ठीक है, गधा भी साथ में घर चल सकता है," उस आदमी ने कहा.

तभी गधे को बंदरगाह के जहाज़ों की रोशनी दिखाई दी और उसने सोचा,

"कहीं मेरे मालिक का ट्रक ख़राब न हो जाए."

समाप्त